चतुर्थ अध्याय
विभिन्न गायन शैलियों में ऋतु वर्णित बंदिशों का अवलोकन

भारतीय ऋतुओं की रसमयी प्रकृति ने यहां के साहित्य संगीत और कलाओं को समान रूप से प्रभावित किया है। यहाँ के रीतिकालीन साहित्य और मध्ययुगीन चित्रकला से इन ऋतुओं का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। ऋतुओं का यह सौंदर्य यहीं तक सीमित न रह सका बल्कि उसके मनोरम दृश्य से यहां के संगीत को भी प्रभावित किया।

संगीत जगत में गायन वादन और नृत्य जितनी भी शैलियाँ है उसमें रचना यानि बंदिश एक महत्वपूर्ण तत्व है। किसी भी राग के प्रस्तुतिकरण में बंदिश दर्पण की भूमिका निभाते हैं। पिछले शताब्दियों में बड़े-बड़े विद्वान बंदिशकार हुए हैं जिनकी बंदिशें आज भी काफी लोकप्रिय हैं। भातखण्डे तथा विनायक राव पटवर्द्धन की रचनाओं में मुख्यतः ऋतु संबंधित वर्णन प्राप्त होते हैं। इनके अलावे सदारंग, अदारंग, मनरंग, सुजान व्यास, पं. शंकर राव, पं. रामाश्रय झा रासरंग की बंदिशे भी खूब लोकप्रिय हुई है।

4.1 धुरपद गायन शैली में प्राप्त ऋतु वर्णित बंदिशें

मीराबाई की मल्हार चौताल (विलंबित)

मुख्य स्वरूप

म रे सा रे ऩि सा ग ग म रे प म प नि ध नि सां

रे सां ध ध नि प म प सां ध नि म प ग म म प

नि प रे म प ध म प

बंदिश (स्थायी)

तुम धन से धन गरजे गरज गरज।
कहा अत जाय बरजे हो।

अंतरा

धाम कहूँ छाह बतावत
कहूँ लागत ओस रे हो

उपर्युक्त बंदिश के माध्यम से वर्षा ऋतु के बादल के गरजने और बरसने का वर्णन दृष्टिगत है।

स्थायी

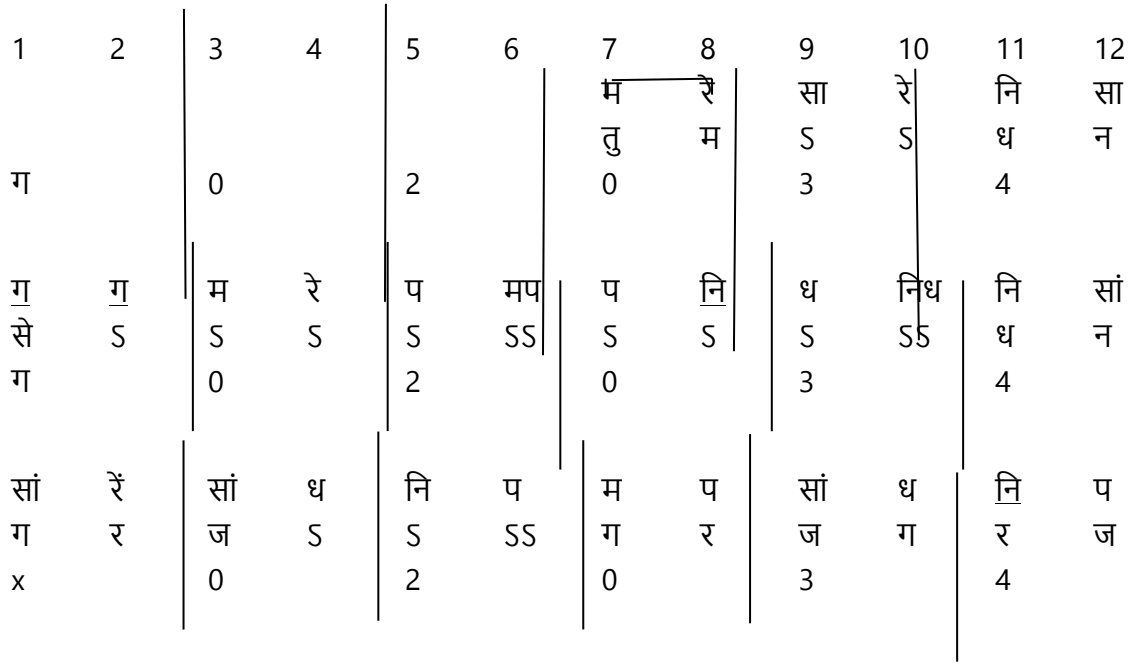

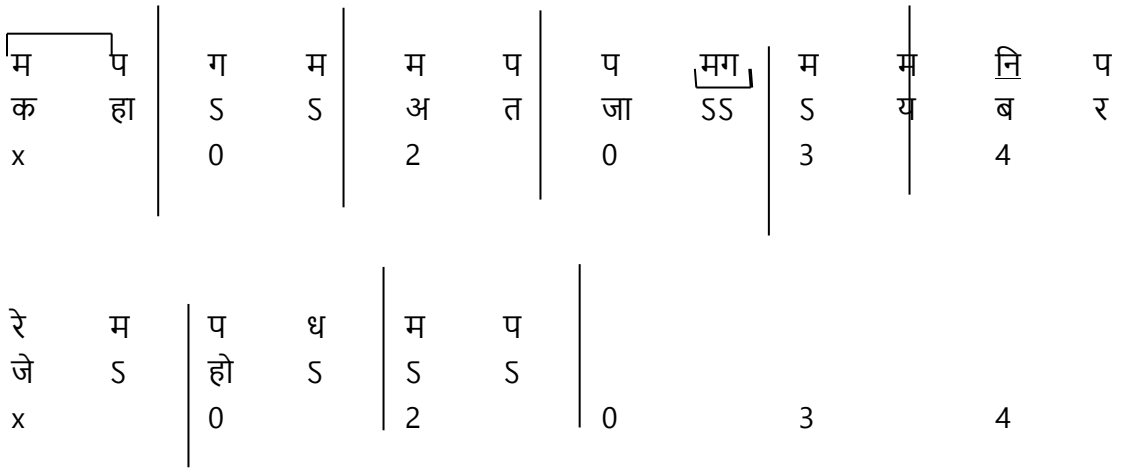

अंतरा

म	प	निप	सां	-	सां	सां	सां		नि	सां	रें
क	हूँ	ऽऽ	धा	ऽ	म	क	हूँ	ऽ	छा	ह	ब
x		0		2		0		3		4	
ध	ध	नि	प	म	प		नि	सां	रें	गं	मं
ता	ऽ	व	त	क	हू	ऽ	ला	ऽ	ग	त	ऽ
x		0		2		0		3		4	
रें	सां	ध	नि	सां	निसां						
ओ	स	रे	ऽ	हो	ऽऽ						
x		0		2		0		3		4	

राग- मेघ मल्हार चौताल (विलम्बित)

आरोह- सा रे म प नि सां

अवरोह- सां नि प म रे सा

पकड़- नि सा रे म रें प म प म रे SS नि SS सा।

बंदिश (स्थायी)

आयो जब बरखा रूत ओरकत कांती नरेस
अंभोधर नग प्रमत्त, कामीजन सब हरषत।

अंतरा

चमकत दामिनी पताक, दंका भयो अशनीरव
केष्ण बरन मधु मेध गगन भरयो समंतात

उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु में दामिनी का चमकना तथा कृष्ण के वरन का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह राग वर्षा ऋतु से संबंधित व इस राग को वर्षा ऋतु में किसी भी समय गाया व बजाया जाता है। मल्हार के स्वर लगाव और वर्षा ऋतु से संबंधित शब्दों का समावेश अत्यंत मधुर रूप में प्रस्तुत किया गया है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नि	सां	सां		सां	सां	रें	रें	सां		नि	ध
आ	S	ये	S	अ	ब	ब	र	खा		रू	त
म		प	प	सां		नि		प	प		रे
ओ	S	रक	ट	कां	S	ती	S	न	रे	S	स
रे	म	नि	S	प	प	रे	रे	म	रे		सा
सा		रे		सा	सा	प	मरे	म	रे	सा	सा
का	S	मी	S	ज	न	स	बS	ह	र	ष	त
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

म	प	नि	सां	सां		नि	सां	रें	नि	सां	सां
च	म	क	त	दा	S	मि	नी	प	ता	S	क
सां		रें		सां	सां	रें	सां	नि		प	प
S	S	का	S	भ	यो	अ	श	नी	S	र	व
रे	रें	रें	रें	रें	म	रें	रें	सां	नि	सां	सां
के	S	ष्णा	ब	र	न	म	धु	र	मे	S	ध
नि	सां	रें	रें	सां		रें	सां		नि		प[2]
ग	ग	न	भ	रयो	S	स	म	S	ता	S	त
x		0		2		0		3		4	

राग- केदार (चौताल)

आरोह- सा रे सा, म, म, प, ध नि सां

अवरोह- सां नि धप मप म रे सा

पकड़- सा रे सा म म प म रे सा।

वंदिश (स्थायी)

बूँद पवन पुरवाई बहे गरज गरज बरसत धन

अंतरा

उमड़-उमड़, घुमड़-घुमड़, उमरात धन घारे

उड़त, बान छुटत प्रान, गरजत लरजत धन

उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु के वर्णन का मनमोहक दृश्य दृष्टिगत है। इस बंदिश में वर्षा ऋतु की बूंद पवन पुरवाई बादल का गरजना उमडते-घुमड़ते बादल का उल्लेख किया गया है। राज केदार वर्षा ऋतु से संबंध न रखते हुए भी स्वरों के लगाव से यह प्रतीत होता है कि वर्षा हो रही है और इस राग के स्वरावली एक-एक भाव वर्षा ऋतु वातावरण निर्माण को साकार कर रहे हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सां			ध	सां	रें	सां		नि	ध	<u>नि</u>	प
बूं	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽ	ब	ऽ	न
मं	प		ध		प		प	प	म		
पु	र	ऽ	बा	ऽ	ई	ऽ	ब	ऽ	हे	ऽ	ऽ
म	म	मग	प	प	प	म	म	सा	रे	सा	सा
ग	र	जड	ग	र	ज	ब	र	स	त	ध	न
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	रें	सां
उ	म	ऽ	उ	म	ऽ	धु	म	ऽ	धु	म	ऽ
सां	ध		सां		रें	सां	नि		ध		प
उ	म	ऽ	रा	ऽ	त	ध	न	ऽ	धो	ऽ	र
सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	सां	रे	सां		सां
उ	ड	त	बा	ऽ	न	छू	ट	त	प्रा	ऽ	न
सां	नि	ध	प	सां	नि	ध	प		म		प[3]
ग	र	ज	त	ल	र	ज	त	ऽ	ध	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	

श्याम कल्याण (चौताल विलम्बित)

आरोह- नि सा रे मं प नि सां

अवरोह- सां नि ध प धमप गमरे निसा

पकड़- नि सां रेम मप गम रे नि सा

बंदिश (स्थायी)

आली री पावस ऋतु आवन के पिया के आवन बैन आली री।

अंतरा

फागुन के दिन ऐसे ही बीतत बिरहा सतावन

दिन रैन आली री।

उपर्युक्त बंदिश में पावस ऋतु के आगमन के साथ पिया के आवन और बिरहिन की व्यथा को स्पष्ट रूप में दृष्टिगत है। हालांकि राग श्याम कल्याण पावस ऋतु से संबंधित नहीं है लेकिन इस बंदिश में पावस ऋतु का वर्णन हुआ है। इस राग में स्वरों के रख रखाव से पावस ऋतु के वर्णन का भाव दृष्टिगत होता है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
							मे		रे		रे
							प	म	ग		निसां
							आ	ली	ऽ	ऽ	रीऽ
म			प				मे				
रे			मे	प	मे	प	प				
पा	ऽ	ऽ	व	स	ऋ	तु					
x		0		2		0		3		4	

अथवा

म					में						
रे			मे	प	प	प	प		मग	मरे	सा
पा	ऽ	ऽ	व	स	ऋ	तु	पि	ऽ	याऽ	ऽऽ	के
नि			नि़		मे		मे				
सां	रे	सा	सा	ध़	नि़	प	प	सा	रे	सा	सा
आ	व	न	के	ऽ	ऽ	ऽ	मो	हे	सु	ना	ए
नि		प			ग				रे		रे
सां	ध	प	ध	मे	प	मग	प	म	ग		निसा
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

म			प								
प	-	-	सां	-	सां	सां	-	-	रें	सां	-
फा	ऽ	ऽ	गु	ऽ	न	के	ऽ	ऽ	दि	न	ऽ
सां	ध	-	सां	-	रें	सां	-	-	ध	नि	प
ए	ऽ	ऽ	से	ऽ	हि	बी	ऽ	ऽ	त	ऽ	त
ग		0		2		0		3		4	
प	प										
मं	मं	-	प	-	प	प	सां	नि	ध	नि	प
बि	र	ऽ	दा	ऽ	स	ता	ऽ	ऽ	व	ऽ	न
प			प				ग		रे		रे
मं	प	मंप	ध	मं	प	मग	प	म	ग	-	निसा
दि	न	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ	नऽ	आ	ली	ऽ	ऽ	रीऽ
म											
रे											
पा											
x		0		2		0		3		4	

राग- यमनी विलावल (विलंबित)

आरोह- सा रे ग, प, नि ध नि सां

अवरोह- सां नि ध, प मप, ग॒म, रेग, रेसा

पकड़- प, धप, मप॒, गम, रेग, मधपमंग, ग म, रे ग, रेसा

बंदिश स्थायी

घेरी री जलधर चहूँ ओर
मोर दादूर शोर करत पिया बिन मोहे

अंतरा

तरफि तरफि चमके कौंध
चकाचौंध लावत ए री पानी पिया निडर
नाही दई की डार तोहे।

उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु के समय चारो तरफ जल भर जाने, मोर दादुर की मोहक आवाज, बिजली की चमक आदि का वर्णन देखने को मिल रहा है। राग यमनी विलावल भी वर्षा ऋतु का राग नहीं है परंतु इस राग की स्वरावली से इस ऋतु का वास्तविक रूप इस बंदिश के माध्यम से मूर्त हो रहा है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
						-	सां	ग	ग	ग	ग
						ऽ	घे	ऽ	री	ऽ	री
ग	ग	रे	ग	प	प	प	प		म		ग
ज	ल	ऽ	ध	ऽ	र	च	हूँ	ऽ	ओ	ऽ	र
ग		रे	ग	रे	सा		सा	ग	ग		प
मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	दा	ऽ	दू	ऽ	र
ग		रे	सा	रे	सा	सा	सा	रे	ग	रे	
शो	ऽ	र	क	र	त	पि	या	ऽ	वि	न	ऽ
सा			सां	रेध	सा						
मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	हे						
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां		सां
त	र	फि	त	र	फि	च	म	के	कौं	ऽ	ध
सां	सां	ध	सां		गं	सां		नि	नि	प	
च	क	ऽ	चौं	ऽ	ध	ला	ऽ	ऽ	व	त	ऽ
ग		प	ध	सां	सां	रें	सां	सां	ध	ध	
ए	ऽ	री	पा	ऽ	पी	प	पि	या	नि	ऽ	र
ग		प	ध	सा	ध	सां	सां		प	ध	प
ना	ऽ	हीं	ऽ	द	इ	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	र
रें	सां	ध	प	ग	प	गरे	सा[5]				
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हेऽ	धे				
x		0		2		0		3		4	

4.2 धमार गायन शैली में प्राप्त ऋतु वर्णन की बंदिशों का अवलोकन

राग हमीर (धमार) बिलंबित

आरोह- सा रे ग मप ग म ध नि सां

अवरोह- सां नि ध, प म प ग म रे सा

बंदिश (स्थायी)

अबीर गुलाल केसर रंग छिरकत बिरजितयन को हरि पकड़ के धाय-धाय

अंतरा

काहूँ को लपटत और झपट काहूँ को

काहूँ को गरे लाय-लाय

उपर्युक्त बंदिश में होली के दृश्य का वर्णन है। जिसमें कृष्ण ब्रज की गोपियों के संग रंग गुलाल खेलने का भाव दृष्टिगत है। यह ऋतु संबंधित नहीं है फिर भी प्रस्तुत राग के स्वर लगाव में होली संबोधित शब्द के भाव दृष्टिगत हो रहे हैं।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
										प अ	प बी	ग र	म गु
ध ला सां प x	- ऽ सां क	- ऽ सानि रऽ	नि ल ध के	ध ऽ - ऽ	सां ला सां धा 2	- ऽ रें य	रें ल सा धा 0	सां के नि ऽ	- ऽ ध य	सां स 3	ध र	प रं	प ग

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	प	-	सां	-	-	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	-
का	हू	ऽ	को	ऽ	ऽ	ल	प	ट	ऽ	औं	ऽ	र	ऽ
सां	ध	-	सां	-	सा	रें	सां	-	नि	सां	ध	प	-
झ	प	ऽ	ट	ऽ	का	ऽ	हूं	ऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ
प	म	ग	म	रें	सां	-	ध	सां	नि	रें	रें	सा	-
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हू	ऽ	को	ऽ	ऽ	ऽ	ग	रे	ऽ
प	नि	ध	सां	नि	रें	रें	सा	नि	ऽ				
ल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	ला	ऽ	य				
x					2		0			3			

राग शंकर (बिलंबित)

आरोह- सा ग प नि ध सां

अवरोह- सां नि धप गप ग रेसा

पकड़- नि ध सां निडप ग प ग रेसा

बंदिश स्थायी

सांवरों होली खेले ब्रज गवालन के संग साँवरो

अंतरा

मृदंग डफ धुन बांसुरी वोरत केसर रंग साँवरो

उपर्युक्त बंदिश में फागुन महीने में मनाये जाने वाले होली का सुन्दर वर्णन है। प्रस्तुत बंदिश में सांवरों शब्द कृष्ण के लिए प्रयोग किया गया है। इस बंदिश में कृष्ण गोपियों के संग होली खेल रहे हैं मृदंग डफ बांसुरी बज रहा है और कृष्ण गोपियों के संग मनोहारी होली का आनंद ले रहे हैं। हालांकि राग शंकरा में ज्यादातर भगवान शंकर का वर्णन मिलता है लेकिन इस राग मं होली वर्णन का भाव स्वरों के माध्यम से स्वतः फुट रहा है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
					सां	नि	प	-	-	ग	प	नि	ध
					सां	व	रो	ऽ	ऽ	हो	ऽ	री	ऽ
सां	-	-	नि	-	प	प	प	ग	-	ग	ग	ग	प
खे	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ब्र	ज	ग्वा	ऽ	ऽ	ल	न	के	ऽ
ग	-	रे	सा	-	सां	नि	प	-	-				
स	ऽ	ऽ	ग	-	सां	व	रो	ऽ	ऽ				
x					2		0			3			

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	प	-	सां	-	सां	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	सां
मृ	दं	ऽ	ग	ऽ	ड	फ	धु	न	ऽ	बां	ऽ	सु	री
गं	सा	-	नि	प	नि	सां	नि	प	-	ग	प	सां	नि
ब	जा	ऽ	व	त	वो	ऽ	र	त	ऽ	के	ऽ	स	र
प	ग	प	ग	सा	सां	नि	प	-	-				
रं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	सां	व	रो	-	-				
x					2		0			3			

राग बागेश्री बिलंबित

आरोह- नि सा ग म ध नि सा

अवरोह- सां नि ध म प ध म ग रे सा

पकड़- सा नि ध नि सा म म ग ऽ रे सा

स्थायी

आयो फागुन मास सजनी खेलोगी नंद सों होरी हो हो हो

अंतरा

एक वाचत एक मृदंग बजावत और रबाब मजीरन की जोरी

उपर्युक्त बंदिश में फागुन में कृष्ण के होली खेलने के मनोहारी दृश्य का वर्णन है। बागेश्री राग होली गीतों में नहीं मिलता परंतु इसके स्वर फाग के सौंदर्य को सार्थक कर रहे हैं।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
										सां	ध	ध	ध
										आ	ऽ	यो	ऽ
नि	-	-	ध	-	म	ध	ग	-	ग	म	ग	रे	सा
फा	ऽ	ऽ	गु	ऽ	न	ऽ	भा	ऽ	स	स	ज	नी	ऽ
रे	सा	-	नि	-	ध	-	सा	सा	-	म	-	ध	मग
खे	ऽ	ऽ	लो	ऽ	गी	ऽ	नं	दू	ऽ	ला	ऽ	ल	साऽ
म	ध	-	नि	ध	ग	-	मग	रे	सा				
हो	ऽ	ऽ	हो	ऽ	हो	ऽ	होऽ	ऽ	री				
x					2		0			3			

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
म	ग	म	नि	-	ध	नि	सा	-	-	नि	सां	सां	-
ए	क	ऽ	ना	ऽ	ऽ	च	त	ऽ	ऽ	ए	ऽ	क	ऽ
नि	सां	-	रे	-	गं	सां	नि	सां	-	नि	-	ध	-
म	द	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ब	जा	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
नि	ध	नि	सां	-	-	सां	सां	मं	ज	रे	-	सां	-
औ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	र	बा	ऽ	ऽ	ब	ऽ	म	ऽ
नि	ध	ध	नि	ध	ग	-	रे	-	सां				
जा	ऽ	ऽ	र	न	की	ऽ	जो	ऽ	री				
x					2		0			3			

राग बहार धमार

आरोह- <u>नि</u> सा <u>ग</u> म, प <u>ग</u> म ध नि सां

अवरोह- सा <u>नि</u> प म, प ग म रे सा

पकड़- <u>नि</u> प म प <u>ग</u> ड म, <u>ग</u> म <u>ग</u> ध नि सां

बंदिश स्थायी

होरी खेलत सिरी मोहन राधे होरी

अंतरा

अति श्रृंगार करे ठारो गोरी लिये के सर पिचकारी

उपर्युक्त बंदिश में राधा और श्याम के होली खेलने का मनोहारी चित्रण है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
							सा	म	म	प	प	<u>ग</u>	म
							हो	री	खे	ल	त	सि	री
<u>नि</u>	ध	नि	सां	-	सां	-	सा	म	म				
मो	ह	न	रा	ऽ	घे	ऽ	हो	री	खे				

अंतरा

नि	<u>ध</u>	नि	सां	-	सां	सां	रे	नि	सां	सां	सां	सां	सां	
अ	ति	श्रृ	गा	ऽ	र	क	रे	ऽ	ऽ	ठा	ऽ	रो	ऽ	
गं	गं	मं	रे	रें	सां	-	रे	नि	सां	<u>नि</u>	प	म	प	
जो	ऽ	ऽ	री	लि	ये	ऽ	के	ऽ	ऽ	स	र	पि	च	
ग	ग	म	रे	रे	सा	-	सा	म	म					
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	हो	री	खे					
x					2		0			3				

राग गौड मल्हार (धमार)

आरोह- सा रे ग म, रे प, म प ध नि सां
अवरोह- सां ध <u>नि</u> प म ग म रे सा
पकड़- रे ग, रे म ग रे सा, रे ग म, रे म प

बंदिश (स्थायी)

उमड़ & उमड़ ज्यों रंग बरसत परत केसर की पिचकारी

अंतरा

अबीर गुलाल की बादर छाए मानो कामिनी
दामिनी चमकत बदन उधारी।

उपर्युक्त बंदिश में आकाश में अबीर गुलाल की लाली छाने की बिजली चमकने का वर्णन है। राग गौड़ मल्हार वर्षा ऋतु का राग है लेकिन बंदिश में रंग अबीर गुलाल आदि का वर्णन है जो फाग से संबंध रखता है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
							रे	प	प	प	ध	म	प
							उ	म	ड़	धु	ऽ	म	ऽ
ध	सा	-	ध	प	म	म	ग	म	प	म	ग	-	ग
ध	न	ऽ	ज्यों	ऽ	रं	ग	ब	र	ऽ	स	त	ऽ	प
म	रे-	सा	रे	सा	सा	सा	म	प	निध	सानि	रेंरे	सां	सां
र	त	ऽ	के	ऽ	स	र	की	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	पि	च
सां	-	ग	म	प	म	म	रे	प	प				
का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	उ	म	ड़				
x					2		0			3			

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	प	-	ध	ध	सां	-	सां	सां	-	सां	रें	सां	सां
अ	बी	ऽ	र	गु	ला	ऽ	ल	के	ऽ	बा	ऽ	द	र
ध	ध	ध	नि	सां	-	सां	सां	रें	सां	ध	-	नि	प
छा	ऽ	ऽ	ए	ऽ	मा	नो	का	ऽ	ऽ	मि	ऽ	ऽ	नी
म	-	रे	प	प	ध	मप	ध	सां	सां	ध	प	म	प
दा	ऽ	ऽ	मि	नी	च	मऽ	क	त	ऽ	ब	द	न	उ
ध	सां	ग	म	प	म	-	रे	प	प				
धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	उ	म	ड़				
x					2		0			3			

4.3 ख्याल गायन शैली में प्राप्त ऋतु वर्णित बंदिशों का अवलोकन

ख्याल गायन शैली में मुख्य भाषा ब्रजभाषा है। ब्रजभाषा के अलावे हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं में भी बंदिशें मिलती है। बंदिशों के साहित्य में विषयों की विविधता पाई जाती है। बंदिशों में मुख्य रूप से ईश्वर भक्ति, श्रृंगार संबंधी चित्रण सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण, राधा कृष्ण, गोपियों की लिलाओं का वर्णन, प्रकृति वर्णन, ऋतु आदि से संबंधित रचनाएँ मिलती है।

ऋतुकालीन रागों की बंदिशों में मुख्यतः उस ऋतु विशेष का वर्णन होता है। जैसे बसंत ऋतुकालीन रागों में फूलों का खिलना, कोयल की बोली, सुगंधित वातावरण का वर्णन। वर्षा ऋतुकालीन रागों में वर्षा ऋतु का होना, बिजली का चमकना आदि का वर्णन रहता है।

राग बसंत

स्थायी

सब बन फूले आई री बहार ऋतु बसन्त की।

अंतरा

औलिया अंबिया सब मुराद मांगत
सदारंग भर पाई।

उपर्युक्त बंदिश में बसंत ऋतु में फूलों के खिलने के सौंदर्य का वर्णन है।

स्थायी

मं	ग	रे	सा	सा	सा	-	-	-	सा
स	ब	ब	ऽ	न	फू	ऽ	ऽ	ऽ	ल
नि	सा	म	-	म	म	-	मधपप	ग	ग
आ	ई	री	ऽ	ब	हा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	र
म	-	ध	-	नि	ध	धप	गमे	ग	रेसा
रि	ऽ	तु	ऽ	ब	सं	ऽऽ	ऽऽ	त	कींऽ
0		3			ग		2		

अंतरा

म	ध	सां	-	सा	सां	सां	-	सां	सां
औ	लि	या	ऽ	अ	बि	या	ऽ	स	ब
सां	सां	-	-	सां	सां	-	नि	ध	नि
मु	रा	ऽ	ऽ	द	मा	ऽ	ग	ऽ	त
मं	ग	रे	सा	सा	प	प	प	ध	ग
स	दा	रं	ऽ	ग	भ	र	पा	ऽ	ई
0		3			ग		2		

आरोह- सा रे म प नि सां

अवरोह- सां नि प म रे सा

पकड़- निऽ सा रे म रे प प म प म रे नि ऽ ऽ सा

बंदिश (स्थायी)

मेघ श्याम घन श्याम श्याम रंग तन छायो

बादर के रूप श्याम प्रेम रंग बरसायो

अंतरा

उमड़ घुमड़ घटा घोर बादरवा करे शोर

गोपी सब बनवारी सबही श्यामरंगभयो।

उपर्युक्त बंदिश में बरसात के मौसम में बादलों का रंग मौसम और सौंदर्य का वर्णन है। इस मौसम में बरसने वाले बादलों का रंग काला होता है और भगवान कृष्ण का भी रंग काला है। मौसम में बादल में और श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में जो प्रभाव है उसे यह बंदिश बहुत ही सुन्दर तरीकों से प्रतिनिधित्व करता है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रे	-	रे	रे	-	सा	नि	सा	सा	नि	-	प
मे	ऽ	ध	श्या	ऽ	म	ध	न	ऽ	श्या	ऽ	म
नि	-	सा	रे	-	रे	रे	प	रे	-	सा	-
श्या	ऽ	म	रं	ऽ	ग	त	न	छा	ऽ	यो	ऽ
सानी	ऽ	सा	सा	रें	-	प	-	प	पनी	म	प
बाऽ	ऽ	द	र	के	ऽ	रू	ऽ	प	श्या	ऽ	म
नि	सांरे	रें	सां	-	नि	प	म	रे	-	नी	सारें
प्रे	ऽऽ	म	र	ऽ	ग	ब	र	सा	ऽ	यो	ऽऽ
ग		0		2		0		3		4	

अंतरा

म	प	प	प	नि	प	नि	सां	-	निसां	-	सां
उ	म	ड	धु	म	ड	ध	टा	ऽ	धो	ऽ	र
सां	-	सां	सां	रेंसां	निप	प	निसां	रेंसां	रें	-	रें
बा	ऽ	द	र	बाऽ	ऽऽ	क	रेऽ	ऽऽ	शो	ऽ	र
रें	-	रे	प	मं	रें	नि	सां	रें	सां	नि	प
गो	ऽ	पी	ऽ	स	न	ब	न	वा	ऽ	री	ऽ
म	प	निसां	रेंड	सां	-	नि	प	म	रे	नि	सारे
सब	निंसा	रेंऽ	सां	-	नि	प	म	रे	नि	सारे	ऽऽ
ग		0		2		0		3		4	

राग बहार तीन ताल

आरोह- नि सा ग म म ग म ध नि सां

अवरोह- सां नि प म, प ग ग, म रे सा

पकड़- नि प म, प ग ऽ म ग म ग म ध नि सा

बंदिश स्थायी

कैसी निकासी चांदनी शरद रात मदमात बिकल गई

पियु पियु टेरत भामिनी

अंतरा

छिन आंगन छिन जात भवन में छिन बैठत छिछन बारिहूँ दौरत

कल न परत तरफत बिरहाकुल चमकत जो दुख भागिनी।

बहार राग मुख्यतः बंसत ऋतु में गाया जाता है। बसंत ऋतु में इस राग को गाने बजाने के लिए समय कि कोई बाध्यता नहीं है। वसंत ऋतु का राग होते हुए भी इस बंदिश में शरद ऋतु की चांदनी रात का बड़ा ही मनोहारी वर्णन है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								-	नि	-	प	म	प	ग	म
								ऽ	कै	ऽ	सी	नि	क	सी	ऽ
ध	-	-	नि	सां	-	नि	सां	सां	सां	-	नि	-	प	म	प
चौं	ऽ	ऽ	द	नी	ऽ	ऽ	ऽ	श	र	द	रा	ऽ	त	म	द
ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	सा	म	म	म	म	प	-	ग	म
मा	ऽ	त	बि	क	ल	म	ई	पि	यु	पि	यु	टे	ऽ	र	त
-	ध	-	नि	सां	-	धनि	सां	-	नि	-	प	म	प	ग	म
ऽ	भा	ऽ	मि	नि	ऽ	ऽऽ	ऽ	-	कै	ऽ	सी	नि	क	सी	ऽ
x				2				0				3			

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								ग	ग	म	-	नि	ध	नि	नि
								छि	न	औ	ऽ	ग	न	छि	न
सा	-	नि	नि	सां	नि	सां	-	नि	नि	सां	-	नि	प	म	प
जा	ऽ	त	न	व	न	में	ऽ	छि	न	बै	ऽ	द	त	छि	न
ग	ग	ग	गम	रे-	-	सा	-	सा	सा	सा	सा	म	प	नि	प
बा	ऽ	रि	हेऽ	दौ	ऽ	र	त	क	ल	ना	प	र	त	त	र
ग	म	ध	नि	सां	-	-	-	सां	-	म	म	रें	रें	नि	सां
फ	त	बि	र	हा	ऽ	कु	ल	च	म	क	त	जो	ऽ	दु	ख
नि	ध	-	-	सां	निसारे	नि	सां	-	नि	-	प	म	प	ग	म
भा	ऽ	ऽ	ऽ	मि	निऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कै	ऽ	सी	नि	क	सी	ऽ
x				2				0				3			

राग- गौड़ मल्हार (झपताल) मध्यलय

आरोह- सा रे ग म रे प म प ध नि सां
अवरोह- सां ध नि पम ग म रे सा
पकड़- रेग, रेम ग रे सा, रे ग म, मरे रेप

बंदिश (स्थायी)

उमड़ उमड़ आये कोर बदरवा
अजहूँ पिया नाहीं आए मदरवा

अंतरा

रूत बरखा में सब घर आए आए प्रेम रंग रसीले पिहरवा

उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु में उमड़ते-घुमड़ते बादलों और ऐसे मौसम में पिया के नहीं होने की वेदना। इस राग में निहित शब्द और स्वर के माध्यम से बंदिश का भाव स्पष्ट हो रहा है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
म	गम	रे	-	प	प	प	ध	म	प
उ	मऽ	ड़	ऽ	धु	म	ड़	आ	ऽ	ये
धनि	सां	ध	नि	प	प	प	म	ग	म
काऽऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ब	द	र	वा	ऽ	ऽ
म	ग	रे	ग	रे	सा	रे	सा	-	सा
अ	ज	हूँ	ऽ	पि	या	ऽ	ना	ऽ	हिं
सा	-	रेगम	-गरे	ग	म	प	म	ग	म
आ	ऽ	येऽऽ	ऽऽऽ	म	द	र	वा	ऽ	ऽ
ग		2			0		3		

अंतरा

प	प	नि	ध	नि	सां	-	सां	-	सां
रू	त	ब	ऽ	र	सा	ऽ	में	ऽ	ऽ
सां	ध	सां	रें	सां	सां	-	ध	नि	प
स	ब	ध	ऽ	र	आ	ऽ	ये	ऽ	ऽ
ग	प	म	म	-	रे	रे	प	धम	म-
आ	ऽ	ये	ऽ	न	प्रे	म	रं	गाऽ	ऽ
धनि	सां	ध	नि	प	म	प	म	ग	-
सीऽऽ	ऽ	ले	ऽ	पि	ह	र	वा	ऽ	-

राग- मियाँ मल्हार

आरोह- निसा, रेम रे, सा म, रेप मप नि ध नि सां

अवरोह- सां, निप, मप, ग मरे सा

पकड़- नि धनि धनि, सा, मरे प, मप निध निप मप ग, मरेसा

स्थायी

धन घोर घोर गरजे बदरवा बरसे घनन घनन

अंतरा

उमड़ उमड़ घन घुरवा गरजे मधुरपिया मोरा जियरा तरसे

पवन चलत सननन नन नननन बूंदनि नाचे झनन झनना

उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु में बादल का बरसने के बादलों का उमड़ना घुमड़ना बिजली का चमकना का मनोहारी वर्णन है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						रेसा	निसा	रे	-	रे	रे	-	रे	प	प
						धऽ	नऽ	धो	ऽ	र	धो	ऽ	र	ग	र
ग	-	-	म	रे	रे	रेसा	निसा	रे	-	रे	रे	-	रे	म	प
जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धऽ	नऽ	धो	ऽ	र	धो	ऽ	र	ग	र
ग	-	ग	म	रे	-	नि	सा	रे	म	रे	रे	सा	सा	नि	-
जे	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ	द	र	वा	ऽ	ब	र	स	ऽ
म	प	नि	ध	नि	सा										
ध	न	न	ध	न	न										
x				2				0				3			

अंतरा

								म	म	प	प	नि	ध	नि	नि
								उ	म	ड़	धु	म	ड़	ध	न
सां	सां	सां	-	सां	रे	सां	-	म	प	नि	ध	नि	सां	रें	रें
धु	र	वा	ऽ	ग	र	जे	ऽ	म	धु	र	पि	या	ऽ	मो	रा
सां	सां	नि	-	निनि	पम	प	-	म	रे	प	प	प	निध	नि	सां
जि	य	रा	ऽ	तऽ	रऽ	से	ऽ	प	व	न	च	ल	तऽ	स	न
ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	सा	रें	-	सां	सां	नि	सा	नि	प
न	न	न	न	न	न	न	न	बूं	ऽ	द	नि	न	ऽ	चे	ऽ
निनि	पम	पनि	पप	ग	म										
झऽ	नऽ	नऽ	झऽ	न	न										
x				2				0				3			

मेघ मल्हार

आरोह- सा रे रे रे मरे मप नि सां
अवरोह- सां निप मरे रेसा
पकड़- रे रे मरे सा रे नि़ सा प नि प रे रे मरे प मरे सां

स्थायी (द्रुत एक ताल)

अब के सावन तुम हमरे नैनन बरसो रे
जरत करेजवा निकसत ज्वाला किन्हीं काहे प्रीत

अंतरा

लहक लहक लहकाए क्यारी क्यारी
मुझ बिरही जन पर गरज गरज
धन गरजो धन बरसो रे

उपर्युक्त बंदिश में सावन माह में वर्षा ऋतु का मनोहारी वर्णन है साथ ही विरहिन को यह मौसम और भी तरसाता है इसका सुन्दर चित्रण इस बंदिश में देखने को मिलता है।

स्थायी

सा	सा	सा	रेसा	नि	प	प	नि	सा	रे	रे	-
अ	ब	के	साऽ	व	न	तु	म	ह	म	रे	ऽ
रे	-	रे	सा	रे	प	रे	-	रेम	रेरे	सा-	निसा
नै	ऽ	न	न	ब	र	सो	ऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ
-	नि	सा	रेम	रे	म	प	नि	-	प	-	प
ऽ	ज	र	तऽ	ऽ	क	रे	ज	ऽ	वा	ऽ	नि
मप	निसां	रें	रें	-	सां	निसा	नि	प-	नि	प	-
कऽ	ऽऽ	ऽ	स	ऽ	त	ज्वाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ला	ऽ
-	-	म	म	-	प	मपनि	म	-	रे	-	सा
ऽ	ऽ	की	न्हीं	ऽ	का	हेऽऽ	ऽ	ऽ	प्री	ऽ	त
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

म	रे	म	प	प	-	नि ल प	नि ह नि	प क सां	नि ल रें	नि ह नि	प क -
ल	ह	का	ऽ	ए	ऽ	क्या	ऽ	री	ऽ	क्या	ऽ
नि	मप	म	प	नि	सां	रें	-	रें	रे	रें	रे
री	ऽऽ	मु	झ	बि	र	ही	ऽ	न	न	प	र
मम	रेंसा	निप	निनि	पम	रेसा	नि	सा	रे	रेप	प	म
गऽ	रऽ	जऽ	गऽ	रऽ	जऽ	ध	न	ग	रऽ	जो	ऽ
-	-	नि	सा	रे	सा	रे	प	-	पम	रेसा	निसा
ऽ	ऽ	ध	न	ब	र	सो	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ
ग		0		2		0		3		4	

राग- रामदासी मल्हार, तीन ताल मध्यलय

आरोह- सा रे ग म, प ग म रे प, प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध नि सा रे ग म प ग रे प ध नि प ग ग म नि प ग म, सा रे सा

मुख्य स्वर समूह- सा नि ध नि सा रे ग म प ग रे प ध नि प ग ग म नि प ग म, सा रे सां

स्थायी

छाये बदरा कारे कारे

तैसो ही जियरा उमडों ही आये।

अंतरा

निश अधियारी कारी बिजुरी चमके
पवन चलत सन न न न न
स न न न पिया बिन जियरा निकसो ही जाये।
उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु के मनोहारी सौंदर्य का वर्णन है।

स्थायी

रेग	मप	गम	रे	सा	नि़सा	धनि़	प	प	-	नि	प	नि	सा	सा	-
रेऽ	ऽऽ	छाऽ	ये	ब	दऽ	राऽ	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ
निस-	ग-मप	ग़म	रे	सा	सा	धा़नि़	प	प़	-	नि	ध	नि	सा	सा	-
रेऽऽऽ	ऽऽऽ	छाऽ	ये	ब	द	राऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	रे	का	ऽ	रे	ऽ
निनि	पम	प	निध	नि	सा	सा	सा	रे	रे	ग	ग	पनि	मप	गम	-रे
उड	मड	ड	धु	म	ड	ध	न	ग	र	ज	त	बऽ	रऽ	सऽ	ऽत
म	-	प	प	नि	ध	नि	सां	नि	प	ग	-गम	निप	ग-	मरे	-
तै	ऽ	सो	ही	जि	य	रा	ऽ	उ	म	गो	ऽऽऽ	ऽऽ	हीऽ	ऽआ	ऽ
स	रेगमप	गम	रे	सा	सा	धा़नि़	प	प	-	नि	ध	नि	सा	सा	-
ये	ऽऽऽ	छाऽ	ये	ब	द	राऽ	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ
x				2				0				3			

अंतरा

म	रे	प	प	प	निध	नि	नि	सां	सां	सां	निध	नि	सां	सां	सां
नि	श	अं	धि	या	रीऽ	का	री	बि	जु	री	ऽऽ	च	म	के	ऽ
निध	निध	ध	नि	सां	सां	सां	सानि	सां	रें	सां	सां	नि	नि	प	प
पऽ	वऽ	न	च	ल	त	स	नऽ	न	न	न	न	स	न	न	न
रे	रे	प	प	प	प	पध	निसां	निप	प	ग	-गम	निप	गम	रे	सा
पि	या	बि	न	जि	य	राऽ	ऽऽ	निऽ	क	सो	ऽऽऽ	ऽऽ	हीऽ	जा	ये
निसारेग	मप	गम	रे	सा	निसा	धनि	प	प	-	नि	ध	नि	सा	सा	-
रेऽऽऽ	ऽऽ	छाऽ	ये	ब	दऽ	राऽ	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ
x				2				0				3			

4.4 ठुमरी गायन शैली में प्राप्त ऋतु वर्णित बंदिशों का अवलोकन

राग खमाज (तीनताल)

आरोह- सा ग म प ध नि सां

अवरोह- सा नि ध प म ग रे सा

मुख्य स्वर समूह-- ग म प ध नि ध म प ध म ग म ग रे सा

बंदिश स्थायी

गरज-गरज बरसत धन
माही देखो आली
बिन गोपाल बरखा ऋतु
भावत अब नाही

अन्तरा

आली बलम बिदेश
बिरहन को अति कलेस
उन बिन जिया निकसो जात
हों सों निठुर श्याम आज आवत अब नाही

उपर्युक्त बंदिश में वर्षा ऋतु में बादल का गरजना साथ ही सखी की विरह व्यथा श्याम कि निठुरता आदि का वर्णन है। प्रस्तुत बंदिश खमाज राग में वर्षा का उल्लेख स्वरों के माध्यम से बहुत सुन्दर रूप से वर्णित है।

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
प	ध	प	-	ध	नि	सां	-	रें	नि	ध	प	ध	-	ग	म
ग	र	ज	ऽ	ग	र	ज	ऽ	ब	र	स	ऽ	त	ऽ	ध	न
प	-	ध	-	म	-	-	-	ग	-	-	-	सा	-	सा	-
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ही	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ	खो	ऽ	आ	ऽ	ली	ऽ
सा	सा	-	सा	ग	-	म	-	ग	म	पध	निसां	नि	सां	-	-
बि	न	ऽ	गो	पा	ऽ	ल	ऽ	ब	र	खाऽ	ऽऽ	ऋ	तु	ऽ	ऽ
प	-	नि	-	सां	सां	नि	सां	प	नि	सां	रे	नि	ध	प	-
भा	ऽ	व	ऽ	ऽ	त	अ	ब	ना	ऽ	ऽ	ऽ	हीं	ऽ	ऽ	ऽ
x				2				0				3			

अन्तरा

म	-	-	नि	ध	-	नि	-	नि	सां	-	नि	सां	-	-	सां
आ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ल	म	ऽ	बि	दे	ऽ	ऽ	स
प	प	-	नि	नि	-	सां	-	नि	सां	-	सा	नि	ध	प	-
बि	र	ऽ	ह	न	ऽ	को	ऽ	अ	ति	ऽ	क	ल	ऽ	स	ऽ
ग	म	-	प	ध	-	नि	सां	नि	ध	प	-	म	ग	म	-
उ	न	ऽ	बि	न	ऽ	जि	या	नि	क	सो	ऽ	जा	ऽ	त	ऽ
सा	-	सा	-	ग	-	म	प	प	-	प	-	नि	-	नि	-
हो	ऽ	सों	ऽ	सां	सां	नि	सां	नि	-	सां	-	नि	ध	प	ध
आ	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	अ	ब	ना	ऽ	ऽ	ऽ	हीं	ऽ	ऽ	ऽ
x				2				0				3			

राग झिंझोटी ताल- दीपचंदी

आरोह- सा रे म प ध सां

अवरोह- सां नि धप म ग रे ग सा

मुख्य स्वर समूह- ध सा म ग रे ग सा रे नि ध सा, ध सा रे, ग म ग, म ग रे सा, नि ध सा

बंदिश स्थायी

छाई बसंत बहार
घर नाहीं सजनवा हमार

अन्तरा

कोयलिया तू मत पुकार

याद आवत सैया बार-बार

उपर्युक्त बंदिश में वसंत ऋतु का मनोहारी वर्णन है। बंसत ऋतु का मनमोहक दृश्य है और विरहिन पिया कि याद में व्याकुल है उसे कोयल की मधुर आवाज भी अच्छी नहीं लगती।

राग मिश्र काफी

ताल- जत् ताल

बोलबनाव की ठुमरी

स्थाई

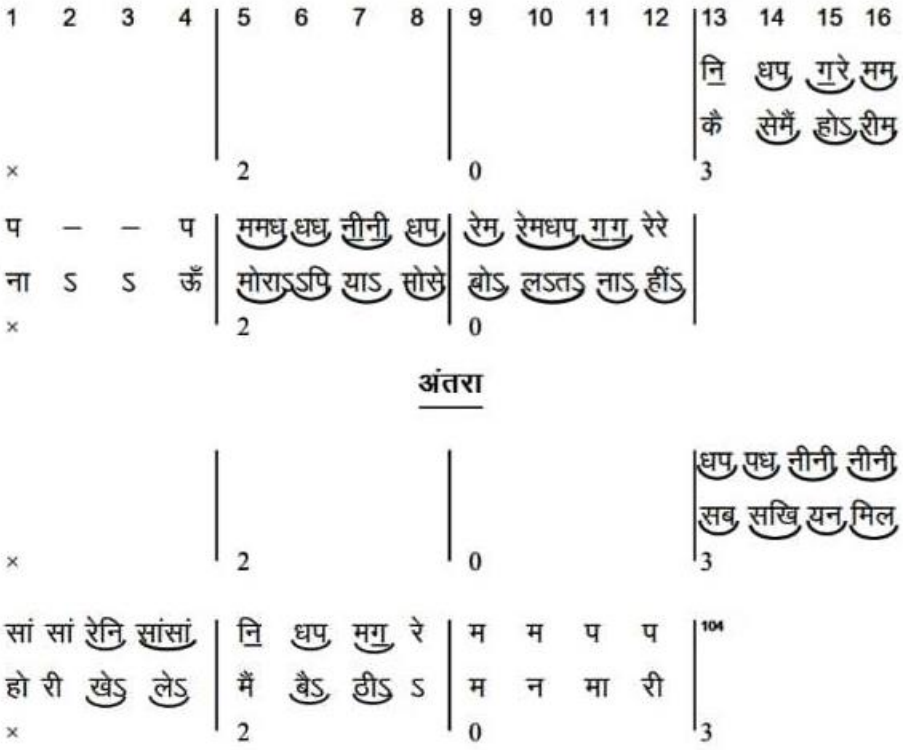

अंतरा

राग मिश्र भैरवी

ताल- तीनताल

बंदिशी ठुमरी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
प	–	प	प	प	ध	म	प	प	नि	ध	नि	प	धप	ग	म
बा	ऽ	ट	च	ल	त	न	यी	चु	न	री	र	ग	डाऽ	ऽ	री
×				2				0				3			
प	–	–	–	ग	रे	नि	रे	ग	म	रे	ग	सा	रे	नि	सा
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ए	सो	तो	बे	द	र्दी	ऽ	ब	न	बा	ऽ	री
×				2				0				3			
नि	सा	ग	म	प	प	ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां
ऐ	सो	तो	नि	ड	र	ड	र	त	न	का	हू	से	ज	ब	र
×				2				0				3			
सां	गं	रें	गं	सां	रे	नि	सां	ध	नि	ध	नि	ध	प	प	ध
अ	प	ने	धि	ना	धि	नि	क	र	त	है	ल	ग	र	हे	मो
×				2				0				3			
प															
ब															
×															

राग केदार बहार - तीनताल (मध्यलय)

स्थायी- कमल मुख खोलो आजु पियारे, विकसित कमल, कुमोदिनी मुकलित अलिबन मत्त गुँजारे।

अंतरा- ललित किसोरी सुनियह बानी, करकुट विसद पुकारे, रजनी राज विदा मांगे बलि, निखौ पलक उधारे।

राग- भैरव बहार

ताल- त्रिताल, छोटा ख्याल

स्थायी- जोवना रे ललैया को अत धूम के धामे।

अन्तरा- बरजो न जात बरजो न माने अचपल बूझे कैसे आये।।

स्थायी

X				5				0				13			
											मनि	धनि्	प	म	ग
											जो•	•	ब	ना	•
म	—	मसा॑	नि्	नि्सा॑	नि्	ध	—	(ध)म	—	म	—	—	म	प	—
रे	ऽ	••	•	••	•	•	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	ऽ	ल	लै	ऽ
म	—	—	—	गम	पम	रि्	—	सा	—	—	ग	म	नि्	ध	नि—सा॑
या	ऽ	ऽ	ऽ	••	••	•	ऽ	को	ऽ	ऽ	अ	त	धू	•	म—ऽ
नि	सा॑	—	—	—	(म)नि्	प	—	(ध)ग	—	म					
के	•	ऽ	ऽ	ऽ	धा	•	ऽ	मे	ऽ	•					

बसंत बहार

(बलवंतराग भट्ट भावरंग)

छबि नवल बनी नटनागर की,

नव नवल राधिका संग सोहे प्रिय बाँह गही गुणसागर की।

गात उभय बहार- बंसत को, भावरांग सों भर्यो भूम अनंत को

मध्य तारा द्रुत तान, बरनी न जाय उजागर की।।

तीनताल

स्थायी

X				2				0				3			
						म॑	म॑ध॒	ध॒नि	सां	नि	ध॒	पध॒	म॑प	म॑	ग
						छ	बिऽ	नऽ	व	ल	ब	नीऽ	ऽऽ	न	ट
ध॒															
म॑	ध॒	नि	सां	रें॒नि	सां	सां	सांनि	ध॒	ध॒रें॒	सांरें॒	निसां	–	नि	ध॒म॑म॑–	ध॒
ना	ऽ	ग	र	कीऽ	ऽ	न	वऽ	न	वऽ	लऽ	राऽ	ऽ	घि	काऽऽऽ	ऽ
ध॒नि	सां	नि	धम॑म॑–	–	ग	रे॒	सा	–	साम	–म	म	पनि॒	मप	ग॒म	ग॒म
संऽ	ऽ	ग	सोऽऽऽ	ऽ	हे	प्रि	य	ऽ	बाँ ऽ	ऽह	ग	हीऽ	ऽऽ	गुऽ	णऽ
			सां				रें॒		रें॒						
नि॒	–ध	सा	नि	सांरें	ग॒रें	सांनि	सां	निध॒	ध॒निसां–	–नि	ध॒	पध॒			
सा	ऽऽ	ग	र	कीऽ	ऽऽ	छऽ	बि	ऽऽ	नऽवऽ	ऽल	ब	नीऽ			

अंतरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
				म	म	म	म	ध़	म	ध़	नि़	सां	सां	सां	सां
				इ	त	ने	दि	न	न	मो	से	क	ब	हू	न
×				2				0				3			
रें़	नि़	सां	–	सां	गं़	रें़	गं़	सां	रें़	नि़	सां	ध	नि़	ध	प
अ	ट	की	ऽ	नि	त	प्र	ति	जा	ऽ	त	म	लि	न	में	ऽ
×				2				0				3			
ध	नि़	ध	नि़	ध	नि़	स़	प	प	ध	प	सां	सां	सां	नि़	ध
कु	व	र	का	ऽ	न्हा	अ	ब	जा	ग	त	फा	मु	न	म	त
×				2				0				3			
नि़	–	नि़	नि़	ध	नि़	ध	नि़	ध	नि़	प	ध	प	–	प	ध़
बा	ऽ	री	म	या	ऽ	दे	ऽ	त	मा	ऽ	रि	या	ऽ	हे	मो
×				2				0				3			
प	सां	–	सां	प	ध़	प	सां	–	सां	प	ध़	प	म	ग़	म
रे	स	ऽ	म	हे	मा	रे	रा	ऽ	म	हे	मो	रे	रा	ऽ	म
×				2				0				3			
प	105														
ब															
×															

राग वसंत झपताल

स्थायी

सब बन फूले आई री बहार रितु बसंत की।

अंतरा

औलिया अंबिया सब मुराद मांगत

सदारंग भर पाई

स्थायी

म	ग	रे	सा	सा	सा	-	-	-	सा
स	ब	ब	ऽ	न	फू	ऽ	ऽ	ऽ	ले
नि	सा	म	-	म	म	-	पधपप	ग	ग
आ	ई	री	ऽ	ब	हा	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ	र
मे	-	ध	-	नि	ध	धप	गम	ग	रेसा
रि	ऽ	तु	ऽ	ब	स	ऽऽ	ऽऽ	त	कीऽ

अंतरा

म	ध	सां	-	सां	सां	सां	-	सां	सां
औ	लि	या	ऽ	अं	बि	या	ऽ	स	ब
सां	सां	-	-	सां	सां	-	नि	ध	नि
मु	रा	ऽ	ऽ	द	माँ	ऽ	ग	ऽ	त
म	ग	रे	सा	सा	प	प	प	ध	ग
स	दा	रे	ऽ	ग	भ	र	पा	ऽ	ई
0		3			x		2		

राग बंसत तीनताल

स्थायी

फगवा मैं दूँगी रे

एरी माई नंदलाल को बृज में आए

अंतरा

कंचन थाल सजाऊँगी

फूल रंगीले भर लूँगी

बसंत तीनताल

स्थायी

ध	प	म	ग	म	ध	नि	सां	रे	सां	-	नी	ध	प	सां	नि
वा	ऽ	मैं	ऽ	दूँ	ऽ	गी	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	फ	ग
ध	प	मं	ग	मे	ध	नि	सां	रें	सां	-	-	सा	नि	ध	प
वा	ऽ	मैं	ऽ	दू	ऽ	गी	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ए	री	मा	ई
म	ग	ग	मे	ऽ	ल	को	ऽ	बृ	ज	में	गा	ऽ	य	फ	ग
नं	ऽ	द	ला												
0				3				x				2			

अंतरा

म	-	ग	ग	मे	मे	ध	-	सां	सां	सां	-	सानि	रे	सां	-
मो	ऽ	रे	मं	दि	र	वा	ऽ	ज	ब	आ	ऽ	वेंऽ	ऽ	गे	ऽ
नि	-	सां	ग	गं	रें	सां	सां	सां	-	नि	ध	प	-	मे	ग
क	ऽ	च	न	था	ऽ	ल	स	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ	गी	ऽ
सा	-	म	म	ग	-	मे	ध	सां	सां	नि	ध	मे	ध्र	सां	नि
फू	ऽ	ल	रं	गी	ऽ	ले	ऽ	भ	र	लूँ	ऽ	गी	ऽ	फ	ग
x				3				x				2			

राग-बसंती तोड़ी

स्थायी

अजहू न आए बालम रैना बीत जाए

उन-बिन कल न परत मोहे, रह-रह मोरा जिया धबराये

4				x				0							
ग	ग	रे	गरे	सा-	सानि	सा-	रेग	ग-	रे	ग	रेसा	म-	गम	प-	मप
अ	ज	हूं	ऽन	आ	ऽऽऽ	ए	ऽऽऽ	बा	ऽऽऽ	ल	म	र	ऽऽऽ	ना	ऽऽऽ

0				3		4	
धप		मप		मगमग	मधमग	ग-रेसा	गगरेगरे
बीऽ		तीऽ		जाऽऽऽ	ऽऽऽ	ए ऽऽऽ	अजहूऽन

अंतरा

मधनिसां	सांसांरेंगे	रेंरेंसांसां	रेंगरेंग	रेसा
उनबिन	कलपन	रतमोहे	रहरह	मोरा

2			x	
नि-धप		मगमग	मध	मग
जिऽऽऽ		याऽऽऽ	धऽ	बऽ

4	
सा-निसा	मधनिसां
एऽऽऽ	उनबिन

संदर्भ ग्रंथ सूचि:

1. भातखंडे, पं. विष्णु दिगंबर, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग-6, पृ. 320
2. वही, पृ. 290-291
3. भारखंडे, पं. विष्णु दिगंबर, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग-5, पृ. 165-166
4. वही, पृ. 73-74
5. भातखंडे, पं. विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, तीसरी पुस्तक, पृ. 114-15
6. भारतखंडे, पं. विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग-4, पृ. 243-244
7. कुमार (डॉ.) अरबिन्द प्राध्यापक, संगीत विभाग, मगध महिला महाविद्यालय द्वारा प्राप्त किया।
8. भातखंडे, पं. विष्णु नारायण क्रमिक मालिका, भाग-4, पृ. 559-560
9. संगीत जनवरी 1987, पृ. 143
10. देशपांडे, अश्विनी भिंडे, राग रचनांजलि, पृ. 101
11. भातखंडे, पं. विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, पृ. 612-613
12. बनर्जी, डॉ. गीता राग शास्त्र, भाग-2, पृ. 54-55
13. चौधरी (डॉ.) नीरा प्राध्यापिका, मगध महिला महाविद्यालय द्वारा प्राप्त किया
14. वही
15. वही
16. कारवल श्रीमती लीला, ठुमरी परिचय, पृ. 100-102
17. अत्रे प्रभा स्वरांगिनी शब्द और स्वर पृ. 246
18. वही, पृ. 238
19. कारवल, श्रीमती लीला, ठुमरी परिचय, पृ. 110-111

उस्ताद वज्जन खां से प्राप्त